पं. विष्णु दिगम्बर पलुस्कर

संगीत जगत के उस दैदीप्यमान नक्षत्र को, जिसने अपने छोटे से जीवन काल में संगीत जगत को रत्नों से विभूषित कर दिया उन्हें हम पंडित विष्णु दिगंबर पलुस्कर के नाम से जानते हैं। ग्वालियर घराने के प्रमुख गायक, संगीतज्ञ पं. विष्णु दिगम्बर पलुस्कर का जन्म 18 अगस्त 1872 को श्रावण पूर्णिमा के दिन कुरून्दवाड़ रियासत के बेलगांव नामक स्थान में हुआ था। उनके पिता का नाम दिगम्बर गोपाल पलुस्कर और माता का नाम गंगा देवी था। पिता एक अच्छे कीर्तनकार थे और यह उनका वंश-परंपरागत व्यवसाय था। उन्होंने पं. जी को अंग्रेजी शिक्षा दिलानी शुरू की, किन्तु दुर्भाग्यवश दीपावली के दिन आतिशबाजी खेलते समय उनकी आंखों की ज्योति कम हो गई। परिणाम स्वरूप अध्ययन बन्द कर देना पड़ा। आंखों के बिना कोई उचित काम न मिलने के

कारण विवश होकर संगीत की शरण लेनी पड़ी। उन्हें मिरज के पं. बाल कृष्ण बुआ इचलकरंजीकर के पास संगीत-शिक्षा ग्रहण करने के लिये भेज दिया गया। मिरज रियासत के महाराजा ने उनकी प्रतिभा से प्रभावित होकर, उन्हें राजाश्रय दे दिया और सभी समुचित व्यवस्था कर दी।

एक बार मिरज में एक सार्वजनिक सभा आयोजित की गई और रियासत के सभी प्रतिष्ठित व्यक्तियों को विशेष रूप से निमन्त्रित किया गया। पं० विष्णु दिगम्बर जी भी निमंत्रित व्यक्तियों में से एक थे, किन्तु उनके गुरू जी को निमंत्रित नहीं किया गया। पं० जी ने इसका कारण जानना चाहा। पूछने ने पर उन्हें आश्चर्यजनक उत्तर मिला कि अरे ! वे तो गवैये हैं, उन्हें क्यों निमंत्रित किया जाय? अपने पूज्य गुरू और गवैयों के विषय में कहे गये ये वाक्य उनके हृदय में चुभ गये। वे सोचने लगे कि समाज में संगीतज्ञों की यह दयनीय दशा ! अतः पंडित जी ने

संगीतज्ञों की दशा सुधारने, समाज में संगीत को उच्च स्थान दिलाने तथा संगीत का प्रचार-प्रसार करने का दृढ़ संकल्प लिया।

भ्रमण- सन् 1896 में राजाश्रय के सभी सुखों को त्याग कर अपने उददेश्यों की पूर्ति के लिये पंडित जी देशाटन के लिये निकल पड़े। सर्वप्रथम वे सतारा गये, जहाँ उनका भव्य स्वागत हुआ और उनका संगीत कार्यक्रम बहुत सफल रहा। इस प्रकार वहाँ के लोगों में संगीत और संगीतज्ञों के प्रति श्रद्धा उत्पन्न हुई। इसके बाद उन्होंने भारत के अनेक स्थानों का भ्रमण किया और जहाँ भी गये, अपने गायन का प्रदर्शन दिया।

कार्य- संगीत का प्रचार और प्रसार करने के लिये विष्णु दिगंबर जी ने यह अनुभव किया कि सर्वप्रथम गीतों के श्रृंगार रस के अविनीत शब्दों को निकाल कर भक्ति रस के सुन्दर शब्दों को रखा जाय और संगीत के कुछ

विद्यालय स्थापित किये जाय, जहाँ संगीत की शिक्षा दी जा सके। अतः उन्होंने बहुत से गीत के शब्दों में परिवर्तन किया। आपने 5 मई सन् 1901 को लाहौर में एक संगीत संस्था, 'गांधर्व महाविद्यालय' की स्थापना की। उस समय भारतवर्ष का बंटवारा नहीं हुआ था और लाहौर, जो अब पाकिस्तान में है, भारत में ही था। संस्था को सुचारू रूप से चलाने के लिये उन्हें बीच-बीच में आर्थिक संकटों का सामना करना पड़ता। आरम्भ में कई दिनों तक विद्यालय में कोई व्यक्ति प्रवेश के लिये नहीं गया, किन्तु पंडित जी निराश नहीं हुये। स्कूल के समय वे स्वयं तानपूरा लेकर अभ्यास करते। कुछ दिनों के बाद विद्यार्थियों की संख्या धीरे-धीरे बढ़ती गई। इसी बीच उन्हें अपने पिता की मृत्यु का दुखद समाचार प्राप्त हुआ, किन्तु वे विद्यालय के कार्यों में इतने व्यस्त रहे कि ऐसे समय पर भी घर नहीं जा सके।

सन 1908 में पंडित जी ने बम्बई में गांधर्व महाविद्यालय की एक नवीन शाखा खोली। वहाँ पर उन्हें लाहौर की तुलना में अधिक सफलता मिली तथा विद्यार्थियों की संख्या दिन प्रतिदिन बढ़ती गई। लगभग 15 वर्षों तक विद्यालय का कार्य सुचारु रूप से चलता रहा। विद्यालय के भवन निर्माण में विद्यालय को काफी कर्ज लेना पड़ा। कुछ समय तक वह ऋण अदा नही किया जा सका। फलस्वरूप भवन ऋण में चला गया और विद्यालय बंद हो गया। तब से पं. जी का ध्यान रामनाम की ओर आकर्षित हुआ। वे गेरुआ वस्त्र पहनने लगे और हर समय 'रघुपति राघव राजाराम.....' के गायन में मस्त रहने लगे। इसके बाद उन्होंने नासिक (महाराष्ट्र) में 'रामनाम आश्रम' की स्थापना की।

वैदिक काल में प्रचलित आश्रम प्रणाली के आधार पर पलुस्कर जी ने लगभग सौ शिष्यों को तैयार किया। उनके अधिकांश शिष्य उनके साथ रहते। उनके खाने-पीने, रहने

तथा शिक्षा का प्रबन्ध वे स्वयं नि:शुल्क करते। उनके शिष्यों में स्व० वी० ए० कशालकर, स्व० ओमकार नाथ ठाकुर, बी० आर० देवधर, वी० एन० ठकार आदि के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। उन्होंने एक नई स्वरलिपि पद्धति की रचना की जो उन्हीं के नाम पर पण्डित विष्णु दिगम्बर स्वर लिपि पद्धति के नाम से प्रसिद्ध है। उन्होंने लगभग पच्चास पुस्तकें लिखीं, जिनके नाम हैं- संगीत बाल प्रकाश, बाल बोध, राग प्रवेश (बीस भागों में), संगीत शिक्षक, महिला संगीत आदि। 'संगीतामृत प्रवाह' नामक प्रत्रिका भी कुछ समय तक संपादित की। सन् 1930 में वे अस्वस्थ हो गये, फिर भी अपनी कार्य-क्षमता के अनुकूल संगीत-सेवा करते रहे। अन्त में 21 अगस्त 1931 को उन्होंने अपने प्राण त्याग दिये। उनके बारह पुत्र हुये जिनमें से ग्यारह पुत्रों की मृत्यु बाल्यावस्था में ही हो गई। पंडित जी के केवल एक पुत्र दत्तात्रेय विष्णु पलुस्कर अपने जीवन के 35 वर्षों तक संगीत की सेवा करते रहे,

किन्तु ईश्वर की विडम्बना कौन जाने! सन् 1955 की विजयादशमी के दिन उनका भी देहावसान हो गया। सौभाग्य से उनके पुत्र पं. दत्तात्रेय के कुछ रिकार्ड बन चुके हैं जो आकाशवाणी के विभिन्न केन्द्रों से प्रसारित होते रहते हैं।

महान संगीतज्ञ पंडित विष्णु दिगंबर पलुस्कर जी को आज भी भुलाया नहीं जा सकता। संगीत जगत इस महान राष्ट्र सेवक का सदैव ऋणी रहेगा।